भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका, वर्ष-पंचदश, अङ्क द्वितीय, जुलाई-दिसम्बर, 2023 ISSN-2229-452X

शिक्षा में डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम की प्रभावकता

अमिता जैन

शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक कई क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। प्राचीन शिक्षण व्यवस्था व नवीन शिक्षण व्यवस्था में समय–समय पर कई परिवर्तन हुए है। प्राचीन शिक्षण पद्धति में विद्यार्थी को एक निष्क्रिय श्रौता समझ शिक्षा प्रदान की जाती थी। जिसका प्रमुख लक्ष्य सीखे गए ज्ञान को कंठस्थ करना था। शनैः शनैः शैक्षिक व्यवस्था में मनोवैज्ञानिक कारकों के समावेश से शिक्षार्थी को शिक्षा की प्रमुख धुरी माना गया और शिक्षा विद्यार्थी केन्द्रित हो गई। जिसमें शिक्षार्थी अपने सीखे गए ज्ञान का प्रदर्शन परीक्षा में कर अधिकाधिक अंक अर्जन करना अपना लक्ष्य मानता था। किन्तु वर्तमान युग की शैक्षिक व्यवस्था व नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा में प्रजातान्त्रिक गुणों का समावेश कर विद्यार्थियों की सुविधा व रुचि अनुसार शिक्षा लेने हेतु प्रेरित करती है। इस हेतु शिक्षा में नवीन विधियों तथा नवाचारों का प्रयोग किया जा रहा है। तकनीकी के इस युग में शिक्षा को नवाचारों से जोड़कर उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है। जिसके लिए विद्यार्थियों में विषय के अधिगम के प्रति तत्परता, रूचि, पूर्वज्ञान, एकाग्रता आदि गुणों का समावेशीकरण आवश्यक हैं। वर्तमान युग में कई आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का शिक्षण के दौरान, लक्ष्य प्राप्ति हेतु उपयोग किया जाता है। इन्ही में एक शिक्षण पद्धति है– ''डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम''। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षा में अनेक नवाचार स्थापित किए गए हैं, जिससे बालक आसानी से सीख सके। डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम के तहत बालकों को सफलतापूर्वक शैक्षिक प्रक्रिया की ओर उन्मुख किया जा सकता है, जिससे बालक शिक्षण में रूचि लेकर सक्रिय सहभागिता के साथ शिक्षा के मार्ग पर अग्रसर हो सकें।

शिक्षा में हुए कई क्रान्तिकारी परिवर्तनों, वैश्वीकरण, मनौवैज्ञानिक कारण तथा समय की मांग के अनुसार वर्तमान युग में शनैःशनैः शिक्षण की इन नवीन तकनीकों में बालक को शिक्षण का केन्द्र मानते हुए शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान किया जाता है। परम्परागत शिक्षण विधियों से उलट नवीन शिक्षण विधियाँ, मनौवैज्ञानिक शिक्षण पद्धति छात्रों को शिक्षण प्रक्रिया में बनाए रखनें में सक्षम व छात्रों को शिक्षा में रूचि जाग्रत करने हेतु प्रेरित करती है। नई शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षा में नवाचारों के उपयोग पर बल दिया गया है। जिससे बालकों में भयमुक्त शिक्षा का संचरण हो सके। वर्तमान युग में कई आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का शिक्षण के दौरान, लक्ष्य प्राप्ति हेतु उपयोग किया जाता है। इन्ही में एक शिक्षण पद्धति है– ''डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम''। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षा में अनेक नवाचार स्थापित किए गए हैं, जिससे बालक आसानी से सीख सकें। डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम के तहत बालकों को सफलतापूर्वक शैक्षिक प्रक्रिया की ओर उन्मुख किया जा सकता है, जिससे बालक शिक्षण में रूचि लेकर सक्रिय सहभागिता के साथ शिक्षा के मार्ग पर अग्रसर हो सकें। अतः डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन शिक्षा की ऐसी विधि है, जिसे बालकों में ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनों ही प्रकार से प्रदर्शित कर शिक्षण कार्य सुगम तरीके से करवाया जा सकता है। वर्तमान कोविड–19 के दौर में यह शिक्षण विधि शिक्षकों व विद्यार्थियों दोनों के लिए ही उत्तम साधन साबित हुई है। जिसका प्रयोग कर वर्तमान परिस्थितियों में भी शिक्षण कार्य बिना रूकावट के रूचिकर ढंग से आगे बढ़ सका है। डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम में बालक की अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय रख शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाता है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया सरल, बोधगम्य व रूचिकर हो जाती है। वर्तमान वैश्विक महामारी कोविड–19 के दौर में जहाँ एक ओर सम्पूर्ण देश में लॉकडाउन जैसी समस्या उत्पन्न हुई, जिसके फलस्वरूप कई अन्य आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक आदि समस्याएँ उत्पन्न हुई, वहीं दूसरी ओर शैक्षिक वातावरण भी कुछ समय हेतु डगमगा गया। परन्तु शिक्षा में निरन्तर होने वाले नवीन प्रयोगों अथवा नवाचारों के प्रयोगों से शैक्षिक व्यवस्था में सुदृढ़ीकरण हुआ। इसी दिशा में देश में ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था मील का पत्थर साबित हुई। प्राइवेट या निजी शिक्षण संस्थानों में भी ऑनलाइन कक्षाओं को रूचिकर व ज्ञानवर्धक बनाने हेतु शिक्षकों द्वारा विभिन्न शैक्षिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों का प्रयोग किया जा रहा है। ''डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम'' द्वारा ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों प्रकार से बालक की

डॉ अमिता जैन, सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

अधिकतम ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय रख शैक्षिक कार्यक्रमों के उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।

डॉक्यूमेन्ट्री का अर्थ व परिभाषा– डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म एक गैर–काल्पनिक गति चित्र है। जिसका उद्देश्य ''दस्तावेज वास्तविकता'' मुख्य रूप से शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्यों या एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए है। डॉक्यूमेन्ट्री शब्द का उद्‌गम 'डॉक्यूमेन्ट' शब्द से हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ लिखित रूप में निहित, प्रमाणिक अथवा दस्तावेजी साक्ष्य होता है। वास्तव में डॉक्यूमेन्ट्री एक सच्चे या वास्तविक सबूतों के साथ किसी विशेष परिस्थिति, व्यक्ति या घटना को उजागर करने वाली लघु फिल्म होती है अर्थात् डॉक्यूमेन्ट्री टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर अथवा तकनीकी संसाधनों द्वारा प्रदर्शित ऐसा कार्यक्रम अथवा लघु फिल्म है, जो किसी विशेष सूचना देने हेतु या जागरूकता हेतु सच्ची घटनाओं अथवा लेखों पर आधारित होती है। जिससे घटित हुई उस घटना या सूचना को दर्शकों तक सरलता से पहुँचाया जा सकें। डॉक्यूमेन्ट्री एक ऐसी लघु फिल्म है, जो मुख्य रूप से लाइव या अनियन्त्रित फुटेज, वास्तविक दस्तावेजों, साक्षात्कार या आंशिक प्रतिक्रियात्मक नाटकीयता से बनी हो जिसका समग्र जोर तथ्यों पर होता है। प्रारम्भिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में, जिन्हें मूल रूप से 'वास्तविकता फिल्में' कहा जाता है, एक मिनट या उससे भी कम समय की होती थी। समय के साथ डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में लम्बें समय तक बनने के लिए विकसित हुई और साथ ही अधिक श्रेणियों में इनकों शामिल किया गया। जैसे– शैक्षणिक, पर्यवेक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि। डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में बहुत रोचक, जानकारीपूर्ण और अक्सर विद्यालयों के भीतर प्रयोग की जाने वाली एवं विभिन्न सिद्धान्तों को आसानी से पढ़ाने के लिए एक संसाधन के रूप में प्रयोग की जाती है। इस कड़ी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे–यू–ट्यूब, फेसबुक आदि ने डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म शैली के विकास हेतु एक अवसर प्रदान किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म के वितरण क्षेत्र और सहजता में वृद्धि की है। इससे दर्शकों की अधिक संख्या को शिक्षित करने की क्षमता में वृद्धि हुई है और इससे संबंधित जानकारी प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की पहुँच को व्यापक बनाया है। बिल निकोलस के अनुसार– ''डॉक्यूमेन्ट्री एक फिल्म निर्माण प्रथा या एक सिनेमाई परम्परा और दर्शकों के स्वागत की एक विधा है। जिसकी विशेषता स्पष्ट सीमाओं के बिना एक अभ्यास है। डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों के माध्यम से किसी देश, स्थान, संस्कृति, समाज, संस्था, व्यक्ति या ऐसे ही किसी अन्य विषय से सम्बन्धित प्रमाणिक व सत्य तथ्यों को प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इन्हें आकर्षक व रूचिकर बनाने के लिए इनमें साक्षात्कार, संवाद, संगीत, वृतांत तथा ध्वनि प्रभावों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाता है। डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों की सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह गागर में सागर की भांति संबंधित विषय के बारे में सारी जानकारी किस प्रकार प्रस्तुत करती है। डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों में स्क्रिप्ट या आलेख का बहुत महत्व होता है। क्योंकि इस आलेख या स्क्रिप्ट को आधार बनाकर ही डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म का निर्माण किया जाता है। डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म एक प्रकार का दस्तावेज ही है, जिसे चित्रों व ध्वनि प्रभावों से रचा जाता है। डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म किसी भी विषय पर बनाई जा सकती है और यह उस विषय पर एक प्रमाणिक दस्तावेज जैसी होती है। डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म जन संचार माध्यमों के साथ–साथ जन शिक्षण के लिए भी बनाई जाती है।

डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम की विशेषताएँ–

डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण में विद्यार्थियों को स्वंय को व्यक्त करने की कला सिखाई जाती है।

डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण से नवीन विषय वस्तु, नवीन अवधारणाओं और नवीन प्रौद्योगिकी का परिचय सरलता से होता है।

शिक्षण कार्य रूचिकर तथा बोधगम्य हो जाता है।

डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में छात्रों में अनुकूलता का गुण विकसित होता है।

इसके प्रभाव से प्रेरित होकर छात्रों में चिन्तनशीलता, सृजनात्मकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।

डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण द्वारा सीखने की क्षमता का सकारात्मक विकास होता है।

डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण में बालक की अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय कर सहभागिता से अधिगम करवाया जाता है, जो ज्ञान के स्थायित्व रहने में सहायता प्रदान करती है।

डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण एक मनोवैज्ञानिक विधि है, जिसमें संबंधित विषय वस्तु को विद्यार्थियों की रुचि अनुसार प्रस्तुत कर रूचिकर व बोधगम्य बनाया जाता है।

डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण द्वारा कठिन विषयवस्तु, सिद्धांतो आदि को रूचिकर ढंग से प्रस्तुत कर आसानी से सिखाया जा सकता है।

डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण विद्यार्थियों को विषय के प्रति संवेदनशील तथा वास्तविक परिस्थितियों में सीखे गए ज्ञान का प्रयोग करने योग्य बनाती है।

आधुनिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में –शुरूआती दौर से आधुनिक युग में डॉक्यूमेन्ट्री के निर्माण, शैली, विषय आदि में कई परिवर्तन आए हैं। आधुनिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में नाटकीयता के जुड़ने से अधिक तेजी से सफल व दर्शकों तक पकड़ बनाने में सफल हुई है। लोगों को शिक्षित करने, किसी विषय के प्रति जागरूक करने आदि हेतु नाटकीय कथानक फिल्मों की अपेक्षा डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में अधिक प्रभावकारी व आकर्षक है। डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म निर्माता अपनी फिल्मों के साथ सामाजिक प्रभाव अभियानों का उपयोग तेजी से कर रहे हैं। ऐसी डॉक्यूमेन्ट्री के उदाहरणों में कोनी (2012), सलमा नेबर, गैसलैंड, गर्ल राइजिंग आदि शामिल है। वर्तमान तकनीकी व डिजिटल युग ने हल्के डिजिटल वीडियो के निर्माण में अत्यधिक सुविधा सहायता प्रदान की है। वर्तमान में डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों में नवाचार व उन्नत प्रदर्शन हेतु कुछ डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म पुरस्कार भी दिए जाते हैं जैसे–

ग्रियर्सन पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म हेतु अकादमी पुरस्कार

जॉरिस इवेन्स पुरस्कार

अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव एम्स्टर्डम (आई.डी.एफ.ए.)

मार्गरेट मिड फिल्म महोत्सव

ग्रांड पुरस्कार, विजन डू रील

कुछ प्रमुख शैक्षिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में हैं–

नेवर गिव अप (मोटिवेशनल मूवी)

बुरा वक्त

डॉक्यूमेन्ट्री के प्रकार– चूंकि सभी डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में समान नहीं होती है, विभिन्न प्रकार की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों को सिनेमैटोग्राफर से विभिन्न तकनीकों की आवश्यकता होती है। डॉक्यूमेन्ट्री शैली के छः प्रमुख प्रकार है–

1 काव्यात्मक डॉक्यूमेन्ट्री शैली– काव्यात्मक डॉक्यूमेन्ट्री शैली को सर्वप्रथम 1920 के दशक में लाया गया। जिसका उद्देश्य विभिन्न अनुभवों, छवियों व दर्शकों को अलग–अलग आँखों से दुनिया दिखाना था। इसमें किसी भी सामग्री के सार या कथा को काव्य उप शैली के रूप में अपरम्परागत या प्रयोगात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। इसका अन्तिम लक्ष्य एक सच्चाई के बजाए एक भावना पैदा करना है। काव्यात्मक डॉक्यूमेन्ट्री शैली में रचनात्मक रचनाओं, चुनौतीपूर्ण तुलनाओं और सिनेमाई कहानी कहने के विभिन्न रूपों को ढूँढ़कर डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म निर्माण के सभी तत्वों के साथ प्रयोग करने में एक मूल्यवान सबक प्रदान करता है। इस शैली में अस्पष्ट, काव्यात्मक, अमूर्त कल्पना शक्ति का प्रयोग कर कहानी का वर्णन किया जाता है।

2 वर्णनात्मक डॉक्यूमेन्ट्री शैली– यह शैली काव्यात्मक डॉक्यूमेन्ट्री शैली के ठीक विपरीत है। काव्यात्मक शैली में जहाँ अस्पष्ट व काव्यात्मक सामग्री का प्रयोग किया जाता है, वहीं वर्णनात्मक शैली में सर्वव्यापी ''वॉयस ऑफ गॉड'' या ''कथन के माध्यम से'' प्रदर्शन करने के नियम पर जोर दिया जाता है। इसलिए वर्णनात्मक शैली अधिक लोकप्रिय शैली है, जिसे लोगों द्वारा वास्तविक डॉक्यूमेन्ट्री कहा जाता है। इस शैली पर अधिकांशतः

टेलीविजन के हिस्ट्री चैनल, डिस्कवरी चैनल आदि आधारित है।[1] वर्णनात्मक शैली किसी भी प्रकार की सूचना या जानकारी देने हेतु सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। वर्णनात्मक डॉक्यूमेन्ट्री शैली को एक वीडियो निबंध के रूप में पेश किया जा सकता है जो किसी विशिष्ट विषय को रोमांचक दृश्यों व तर्को से संबंध स्थापित करके सीधे वर्णन के रूप में प्रस्तुत करता है।

3 सहभागिता डॉक्यूमेन्ट्री शैली– सहभागिता डॉक्यूमेन्ट्री शैली में कथा या कहानी में फिल्म निर्माता का कथानक के रूप में समावेश होना पाया जाता है। यह समावेश उतना ही मामूली हो सकता है जितना कि एक फिल्म निर्माता कैमरे के पीछे से सवालों या संकेतो के साथ अपने विषय को अपनी आवाज में उपयोग कर रहा है या एक फिल्म निर्माता के रूप में प्रमुख रूप से कथा के कार्यों को सीधे प्रभावित कर रहा है। ''निकोल्स (2010) के अनुसार, डॉक्यूमेन्ट्री के सहभागिता शैली में फिल्म निर्माता किसी अन्य की तरह एक सामाजिक अभिनेता बन जाता है। साक्षात्कार के माध्यम से फिल्म निर्माता की आवाज को दिखाया जाता है, क्योंकि यह कहानी के बारे में योगदान देने वाली सामग्री को जोड़ती है जिसे वे बताने की कोशिश कर रहे हैं। इसका एक उदाहरण एरोल मोरिस द्वारा आविष्कृत मशीन है, जिसे 'इंटरट्रोट्रॉन' कहते हैं। यह मशीन कैमरे के लैंस में देखने में सक्षम होने के साथ–साथ विषय को निर्देशक के साथ सीधे जुड़ने की अनुमति देती है।

4 पर्यवेक्षणीय डॉक्यूमेन्ट्री शैली– डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों की पर्यवेक्षणीय शैली का प्रमुख उद्देश्य उनके आस–पास की दुनिया का निरीक्षण करना होता है। पर्यवेक्षणीय डॉक्यूमेन्ट्री शैली दर्शकों को विषय के कुछ सबसे महत्वपूर्ण क्षणों तक प्रत्यक्ष पहुंच प्रदान करके किसी मुद्दे के सभी पक्षों को आवाज देने का प्रयास करती है। वर्षों से यह शैली अत्यन्त प्रभावशाली रही है और फिल्म निर्माता अक्सर वास्तविकता और सच्चाई की भावना पैदा करने के लिए अन्य फिल्म शैलियों में इसका उपयोग करते हैं। इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण बारबरा कोप्पल द्वारा निर्देशित हॉर्लन काउंटी, यू.एस.ए. है। फ्रेड विस्मैन एक ऐसे फिल्म निर्माता है जिन्होंने अपने पूरे करियर में केवल पर्यवेक्षणीय शैली पर आधारित डॉक्यूमेन्ट्री का ही निर्माण किया है। उदाहरण के लिए इनकी फिल्म ''बाक्सिंग जिम'' जो कि एक बाक्सिंग जिम व इसके माध्यम से आने वाले सभी लोगों की डॉक्यूमेन्ट्री है। उनकी फिल्मों का वर्णन करने का सबसे अच्छा तरीका ''दीवार पर उड़ना'' है। यह किसी एक व्यक्ति का दृष्टिकोण नहीं है, यह सर्वज्ञ दृष्टिकोण है, जो दर्शकों को बाहर देखने के लिए बाहर बैठने की अनुमति देता है। ऐसा करने से दर्शक किसी निश्कर्ष पर आ सकते हैं और स्वतन्त्र रूप से निर्णय ले सकते हैं।

5 रिफ्लेक्टिव डॉक्यूमेन्ट्री शैली– रिफ्लेक्टिव डॉक्यूमेन्ट्री शैली सहभागिता डॉक्यूमेन्ट्री शैली के समान है, जिसमें अक्सर फिल्म निर्माता को फिल्मों में शामिल किया जाता है। हालांकि सहभागी शैली के विपरीत रिफ्लेक्टिव डॉक्यूमेन्ट्री के अधिकांश निर्माता किसी बाहरी विषय का पता लगाने का कोई प्रयास नहीं करते हैं, बल्कि वे पूर्ण रूप से खुद पर और फिल्म बनाने की प्रक्रिया पर ध्यान देते हैं। इसका प्रमुख लक्ष्य दर्शकों को फिल्म निर्माण की प्रक्रिया को समझने में सहायता करना होता है ताकि दर्शक एक परिष्कृत व आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। डॉक्यूमेन्ट्री की रिफ्लेक्टिव शैली अक्सर अपने स्वयं के नियामक बोर्ड के रूप में कार्य करती है, जो डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म के भीतर ही नैतिक और तकनीकी सीमाओं को नियन्त्रित करती है। रिएक्टमेन्ट (घटना का वास्तविक फुटेज नहीं होने पर उसके समान दृश्य साध्यक सामग्री का प्रयोग) का उपयोग करने की तकनीक डॉक्यूमेन्ट्री के रिफ्लेक्टिव शैली का एक पहलू है।

6 प्रदर्शनकारी डॉक्यूमेन्ट्री शैली– यह शैली एक प्रायोगिक संयोजन है, जिसका उपयोग विषय के अनुभव पर जोर देने और दुनिया के साथ भावनात्मक प्रतिक्रिया साझा करने के लिए किया जाता है। अक्सर व्यक्तिगत खातों को बड़े राजनीतिक या ऐतिहासिक मुद्दों से जोड़ते हैं और उनके बीच तुलना करते हैं। इसे कई बार ''माइकल मूर'' शैली के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि वह अक्सर अपनी निजी कहानियों का उपयोग सामाजिक सच्चाईयों के निर्माण के तरीके के रूप में करते हैं।

विषय वस्तु के आधार पर डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म को पाँच वर्गो में बाँटा जा सकता है–व्यक्तिपरक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म, विज्ञान विषयक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म, ऐतिहासिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म, सांस्कृतिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म, विशेष प्रयोजन के लिए बनायी

डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म

1. व्यक्तिपरक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म– इस प्रकार की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में मुख्य रूप से किसी व्यक्ति की जीवनी, उसके व्यक्तित्व के विशेष गुणों, उसके जीवन की प्रमुख उपलब्धि अथवा उसके जीवन की किसी खास घटना को केन्द्र में रखकर बनायी जाती है। इस तरह की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों में संबंधित व्यक्ति के जीवन से जुड़े लोगों से बातचीत करके, उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का प्रदर्शन होता है। उदाहरणार्थ– ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का साधारण व्यक्ति से वैज्ञानिक व इसके बाद राष्ट्रपति बनने तक का सफर पर स्वर कोकिला लता मंगेशकर को भारत रत्न मिलने पर लता जी के जीवन पर बनी डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म आदि।

2. विज्ञान विषयक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म– ऐसी डॉक्यूमेन्ट्री मुख्य रूप से विज्ञान विषय से संबंधित होती है। विज्ञान विषयक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों में मल्टीमीडिया और ग्रॉफिक्स का खूब प्रयोग किया जाता हैं। इसके प्रयोग से विज्ञान की उपलब्धियों, प्रयोगों, खोजों तथा परीक्षणों को लोगों तक पहुँचाया जाता है। वनस्पति जगत, जीव जगत, पर्यावरण, अन्तरिक्ष विज्ञान, जीव विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, वन्य जीवन आदि विज्ञान विषयक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों के प्रमुख विषय हैं। उदाहरणार्थ– बिग बैंग सिद्धान्त के आधार पर पृथ्वी की उत्पति की कहानी पर बनायी गई डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म।

3. ऐतिहासिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म– ऐतिहासिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों द्वारा इतिहास के रहस्यों को बताने का कार्य किया जाता है। ये इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं, भूलों आदि के बारे में हमें जानकारी प्रदान करते हैं। ऐतिहासिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में अतीत की घटनाओं को जीवन्त बनाते हैं और दर्शकों के ज्ञान में वृद्धि करते हैं। उदाहरणार्थ– आजादी के प्रमुख आन्दोलन, 1857 की क्रान्ति, जलियाँवाला बाग हत्या काण्ड, आजाद हिन्द फौज के नेतृत्व में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत भूमि पर पहली बार अंग्रेजों को पराजित कर तिंरगा फहराने की घटना आदि पर बनी डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में ऐतिहासिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों के उदाहरण है।

4. सांस्कृतिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म– सांस्कृतिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में कला, संस्कृति, सामाजिक उत्सवों आदि से जुड़े तथ्यों व घटनाओं की जानकारी प्रदान करती है। देश–दुनिया की अलग–अलग संस्कृतियों, कला, सभ्यता, त्यौहारों, खानपान, उत्सवों, रीति–रिवाजों आदि जीवन के विभिन्न रंगों पर बनी सांस्कृतिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में विश्व की अलग–अलग जातियों को एक दूसरें के करीब लाती है। देश की किसी आदिवासी या जनजाति समाज के रहन–सहन, खानपान आदि पर आधारित फिल्में, विभिन्न राज्यों के नृत्य, नाट्य शैली पर आधारित डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में सांस्कृतिक डॉक्यूमेन्ट्री शैली के प्रमुख उदाहरण है।

5. विशेष प्रयोजन के लिए बनायी डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में– उपर्युक्त समस्त श्रेणियों के अतिरिक्त किसी विशेष प्रयोजन के लिए बनाई जाने वाली डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में इस श्रेणी के अन्तर्गत आती है। इस प्रकार की डॉक्यूमेन्ट्री का प्रमुख लक्ष्य इस बात पर होता है कि उसके जरिए दर्शकों को किसी विशेष विषय पर जागरूक बनाया जाए। दर्शकों को किसी खास कार्य को करने से रोका जाए या खास कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाए। वर्तमान में कोविड–19 से बचाव व रोकथाम हेतु जागरूकता लाने हेतु बनायी गई डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इसी के साथ जल संरक्षण, सामाजिक कुप्रथा या बुराई आदि पर बनी डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में भी इसी श्रेणी में आती है।

इसके अलावा निर्माण तकनीक के आधार पर डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है–

1 वास्तविक दृश्यों और सामग्री के आधार पर बनाई गई फिल्में।

2 दृश्यों की पुनर्रचना, कलाकारों के अभिनय और प्रतीकात्मक बिम्बों के आधार पर निर्मित डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म।

1. वास्तविक दृश्यों और सामग्री के आधार पर निर्मित फिल्में– वास्तविक दृश्यों और सामग्री के आधार पर बनायी जाने वाली डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों में वास्तविकता का चित्रण अधिक सरलता से होता है। जीवित व्यक्तियों के जीवन से जुड़ी घटनाओं पर बनी डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म, प्राकृतिक सौन्दर्य, पर्यटन स्थलों, पहाड़ी स्थलों आदि से जुडे विषयों पर निर्मित डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में, त्यौहारों, उत्सवों, पर्वों, समारोहों, रीति–रिवाजों, खान–पान आदि विषय से संबंधित डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में इसी श्रेणी की फिल्में हैं।

2. दृश्यों की पुनर्रचना व प्रतीकात्मक बिम्बों के आधार पर निर्मित फिल्में– इस श्रेणी में प्रायः ऐतिहासिक विषय की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में, अपराध और विज्ञान के प्रयोगों से जुड़ी डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में, खगोल विज्ञान, प्राकृतिक घटनाओं आदि विषय से जुड़ी डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में आती है। इन डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों के निर्माण में निर्देशक की कल्पनाओं के लिए बहुत संभावनाएँ होती है। इन डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों का निर्माण तुलनात्मक रूप से अधिक खर्चीला है। उदाहरण के लिए रानी पद्मावती के जीवन पर बनने वाली डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म में तत्कालीन सामाजिक जीवन, वेशभूषा, परिवेश, युद्ध के दृश्यों हेतु हाथी–घोड़ों का इन्तजाम आदि सभी की हू–ब–हू पुनर्रचना करनी होती है।

डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम के लाभ–

- डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन से छात्रों को नई अवधारणाओं और नवीनतम प्रौद्योगिकी का परिचय आसानी से होता है।
- डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन द्वारा विद्यार्थियों को स्वयं को व्यक्त करने की कला भी सिखायी जाती है।
- डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन द्वारा सीखने की क्षमता का सकारात्मक विकास होता है।
- डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलता का गुण विकसित होता है।
- डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन द्वारा वर्तमान घटनाओं से छात्र प्रेरित होता है। चिन्तनशील लेखन को बढ़ावा मिलता है।

- डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम में बरतने वाली सावधानियाँ– 2012 के एक कार्यक्रम ''टेड टॉक'' के निर्देशक बीबन क्रीडॉन ने अपने लेख में बताया था कि 20वीं सदी की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में एक प्रभावशाली कला है, क्योंकि शैक्षिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में विद्यार्थियों को उनके दैनिक अनुभवों से परे मूल्यों, संघर्षो, नैतिकता तथा नवाचारों से परिचित करवाते हुए उनके जीवन के विकास को विस्तार देने में मदद करती है। शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम के संचालन करते समय कुछ सावधानियाँ अवश्य बरतनी चाहिए। शिक्षक और शैक्षिक पत्राचार में ''मार्क फिलिप्स" ने अपने लेख में डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों को एक महान प्रेरक के रूप में बताया है कि विद्यार्थियों की वर्तमान पीढ़ी वीडियो और डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों की ओर उन्मुख हो रही है। हमें इनका उपयोग शैक्षिक कार्यो में करना चाहिए ना कि इन्हें एक मनोरंजन का साधन बनाया जाए। लगातार बढ़ता डिजिटल परिदृश्य शिक्षकों के लिए भी एक महत्वपूर्ण अवसर है। डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम में बरतने वाली सावधानियाँ निम्नलिखित हैं–

1. सही तथ्यों का प्रदर्शन– शिक्षक विद्यार्थियों के लिए ज्ञान का प्रत्यक्ष स्रोत होते हैं, इसलिए शिक्षकों द्वारा प्रदर्शित तथ्यों का सही होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम के प्रयोग में विषय की गहराई को समझते हुए संबंधित विषय के सही तथ्यों का प्रदर्शन आवश्यक है।
2. शिक्षण के संसाधन के रूप में प्रयोग– डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों का प्रयोग विषय के सिद्धान्तों को आसानी से विद्यार्थियों तक पहुँचाने हेतु किया जाना चाहिए। इन्हें एक मनोरंजनात्मक रूप से विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए।[6] अतः डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों का प्रदर्शन शिक्षण संसाधन के रूप में किया जाना चाहिए।
3. सकारात्मक वातावरण का निर्माण– कक्षाकक्ष में डॉक्यूमेन्ट्री कार्यक्रम के प्रदर्शन से पहले शिक्षक द्वारा कक्षा में संबंधित विषय के प्रति प्रेरित कर डॉक्यूमेन्ट्री विधा से छात्रों को अवगत कराना चाहिए ताकि जिस उद्देश्य के लिए डॉक्यूमेन्ट्री कार्यक्रम का निर्माण किया गया है, उसकी प्राप्ति हो सके।
4. डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन हेतु उपयुक्त तकनीकी संसाधनो का प्रयोग– कक्षाकक्ष में डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन हेतु उपयुक्त माध्यम होना चाहिए। जैसे– प्रोजेक्टर, लेपटॉप, स्मार्ट बोर्ड आदि तकनीकी संसाधनों के प्रयोग से डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों का प्रदर्शन सरलता से किया जा सकता है।
5. छात्रों की रूचि बनाए रखना– कक्षाकक्ष में डॉक्यूमेन्ट्री फिल्मों का प्रदर्शन करते समय शिक्षक को बीच–बीच में शिक्षण बिन्दु को बताते हुए वीडियो का प्रदर्शन करना चाहिए ताकि विद्यार्थी विषय के प्रति रूचि रखते हुए संबंधित प्रकरण से जुड़े रहें।

6. भौतिक संसाधनों की पर्याप्तता– कक्षाकक्ष में डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन से पूर्व कक्षा में पर्याप्त रोशनी, बिजली व तकनीकी भौतिक संसाधनों जैसे– माइक, स्पीकर, लेपटॉप, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड आदि की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

7. छात्रों को डॉक्यूमेन्ट्री की जानकारी– कक्षाकक्ष में ''डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम'' के संचालन से पहले विद्यार्थियों को डॉक्यूमेन्ट्री से परिचित कराना एक शिक्षक हेतु अत्यन्त आवश्यक है। जिससे विद्यार्थी इस विधि को मनोरंजन का साधन न समझ कर अधिगम में इसका प्रयोग कर सकें।

डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम को प्रभावित करने वाले कारक–

शिक्षक की शिक्षण कौशल में दक्षता– डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए शिक्षक का इस कार्य में दक्ष होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि शिक्षक को डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन जैसे नवाचार का पूर्ण बोध नहीं होगा तो वह विद्यार्थियों के अधिगम उद्देश्य की प्राप्ति में सफल नहीं होगा। अतः शिक्षक को डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण कार्यक्रम का ज्ञान परम आवश्यक है।

विद्यालय में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता– विद्यालय में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम को प्रभावित करने वाला कारक है। तकनीकी संसाधनों जैसे प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर या लेपटॉप, स्पीकर, माइक आदि के बिना डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अतः तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता डॉक्यूमेन्ट्री शिक्षण को प्रभावित करती है।

विषय का चयन– सही विषय का चयन भी डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम को प्रभावित करने वाला कारक है। डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं, वर्तमान समाज के ज्वलंत मुद्दों, रूढ़ियों, नवीन तकनीकों, विज्ञान की उपलब्धता आदि सैद्धान्तिक विषयों को सरलता व रूचि के साथ पढ़ाया जा सकता है, किन्तु गलत प्रकरण या विषय के चयन से सही समय पर अधिगम लक्ष्यों की प्राप्ति करना संभव नहीं होगा। अतः सही विषय का चयन भी डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम को प्रभावित करता है।

विद्यार्थियों की रूचि– विद्यार्थियों की रूचि भी एक ऐसा कारक है जो डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम को प्रभावित करता है। कई बार ऐसी तकनीकों के प्रयोग से विद्यार्थियों में विषय के अधिगम के साथ साथ मनोरंजन की रूचि जाग्रत हो जाती है जो कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति को प्रभावित करती है।

परम्परागत शिक्षण तथा डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन शिक्षण में अन्तर–

परम्परागत शिक्षण व्यवस्था शिक्षक केन्द्रित होती है, जबकि डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन में शिक्षक गौण व विद्यार्थियो को ध्यान में रखकर पाठ्यसामग्री तैयार की जाती है।

परम्परागत शिक्षण में चॉक–बोर्ड तथा व्याख्यान विधि का प्रयोग होता है, जबकि डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन में शिक्षक के निर्देशन में किसी विषय का ऑडियो–वीडियो रुचिकर स्वरुप में प्रस्तुत किया जाता है।

परम्परागत शिक्षण में विद्यार्थियों को निष्क्रिय श्रोता बना दिया जाता है जबकि डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन में विद्यार्थियों की अधिकाधिक ज्ञानेंद्रियों को सक्रिय रखा जाता है।

परम्परागत शिक्षण अरुचिकर व उबाऊ रुप से शिक्षा प्रदान करता है, जबकि डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन में छात्रों में विषय के प्रति रुझान, रुचि व सक्रियता बनी रहती है।

परम्परागत शिक्षण अवधारणाओं की समझ के बजाए परीक्षा व परिणाम पर अधिक जोर देता है, जबकि डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन का प्रमुख लक्ष्य ही छात्रों को संबंधित विषय की अवधारणा को समझाना होता है।

निष्कर्षतः– इन विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग विभिन्न विषयों से संबधित जानकारी प्रदर्शन करने हेतु किया जाता है। इस प्रकार शिक्षा में प्राचीन शैक्षिक विधियों के स्थान पर नवीन शैक्षिक विधियों जैसे डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम जैसे नवाचारों के प्रयोग से शिक्षा के ना केवल लघुकालिक उद्देश्यों वरन् दीर्घकालिक उद्देश्यों की प्राप्ति में भी बल मिलता है। वर्तमान शैक्षिक पद्धति केवल ज्ञानार्जन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि प्राप्त ज्ञान का जीवन में वास्तविक

धरातल पर प्रयोग किस प्रकार किया जाए पर अधिक बल देती है। अतः डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन जैसे नवाचारों का शिक्षा में प्रयोग एक अच्छा विकल्प है और वर्तमान में महामारी जैसी परिस्थिति में भी ऑनलाइन माध्यम से इसका प्रयोग इसकी उपयोगिता को और अधिक सकारात्मक दिशा प्रदान कर रहा है। डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम जैसे नवाचारों के प्रयोग से शिक्षा के ना केवल लघुकालिक उद्देश्यों अपितु दीर्घकालीन उद्देश्यों की प्राप्ति में भी बल मिलता है। इस प्रकार ज्ञान के स्थायित्व व व्यवहारशील होने से आज का बालक इस बदलती दुनिया में खुद को समायोजित कर मजबूत वैश्विक नागरिक बनाकर राष्ट्र निर्माण व विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। अतः डॉक्यूमेन्ट्री प्रदर्शन कार्यक्रम शिक्षा के क्षेत्र में ऐसा नवाचार है जो विभिन्न मानवीय मूल्यों व सकारात्मक दृष्टिकोण को एकत्रित कर उन्नत समाज के विकास को मजबूती प्रदान करता है।

सन्दर्भ सूची–

1. अग्रवाल, जे.सी., प्रिंसिपल्स, मैथ्डस् एण्ड टेक्नीक्स ऑफ टीचिंग, न्यू देहली, विकास पब्लिशिंग हाऊस, 2009
2. अग्रवाल, आर. एण्ड गौतम, ए., इफेक्ट ऑफ कन्सट्रक्टिविस्ट मैथड ऑफ टीचिंग ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ प्राइमरी स्कूल स्टूडेन्ट, ज्ञानोदयः द जनरल ऑफ प्रोगेसिव एज्यूकेशन, 2011, 1–6
3. अलयाज, युनुस., द इम्पेक्ट ऑफ इन्वायरमेन्टल डॉक्यूमेन्ट्री मूवीज ऑन प्री सर्विस जर्मन टीचर्स, एन्वायरमेन्टल एटीट्यूटस्, जनरल ऑफ एज्यूकेशन एण्ड ट्रेनिंग स्टडीज, वोल्यूम 5, नं. 1, जनवरी 2017
4. बीटर, जी.जी.एण्ड पीयर्सन, एम.ई., यूजिंग टेक्नोलॉजी इन क्लासरूम (4 एडीशन), बोस्टनः एल्थी एण्ड बेकन, 1999
5. चेक्पोक्स, जे.ई., फिल्मस् एज ए टीचिंग रिसोर्स, जनरल ऑफ मेनेजमेंट इनक्वायरी, 1999, 240–251
6. डन्समोर, के.एण्ड लॉगोस, टी.जी., पोलिटिक्स मीडिया एण्ड यूथ अन्डरस्टेडिंग पॉलिटिकल सोशलाइजेशन वाया वीडियो प्रोडेक्शन इन सैकण्डरी स्कूल्स। लर्निंग, मीडिया एण्ड टेक्नोलॉजी, 2008, 1–10
7. फोर्टनर, आर. डब्ल्यू., रिलेटिव इफेक्टिवनेस ऑफ क्लासरूम एण्ड डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म प्रजेंटेशन ऑन मरीन मेमल्स जनरल ऑफ रिसर्च इन साइन्स टीचिंग 1985, क्रासरेट, 1985
8. जेनिफर मेल्स, पीटर वेन एलेस्ट., डिड द ब्लू प्लेनेट सेट द एजेन्डा फॉर प्लास्टिक पॉल्यूशन ? एन एक्सप्लोरेटिव स्टडी ऑन द इनफलूऐंस ऑफ ए डाक्यूमेन्ट्री ऑन द पब्लिक, मीडिया एण्ड पोलिटिकल एजेन्डाज एन्वायरमेन्टल कम्यूनिकेशन, 2021 पेज नं. 40–54।
9. कैली, पी. गुन्टर, बी. एण्ड बकल, एल., रीडिंग टेलीविजन इन द क्लासरूमः मोर रिजल्टस फ्रॉम द टेलीविजन लिट्रेसी प्रोजेक्ट लर्निंग, मीडिया एण्ड टेक्नालॉजी, 1987
10. माथुर, एस.एस., डवलेपमेंट ऑफ लर्नर एण्ड टीचिंग, लर्निंग प्रोसेस, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन, 2010
11. मेहरोत्रा, एस.एल., यूनिवर्सलाईजिंग एलीमेन्ट्री एज्यूकेशन इन इण्डिया अनकेजिंग द 'टाइगर' इकोनॉमी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू दिल्ली, 2005
12. ओव्ज. आर. डी., इफैक्ट ऑफ एज, एज्यूकेशन एण्ड एटीट्यूटस् ऑन लर्निंग बाय ओल्डर अडल्स्टस फ्रॉम ए डॉक्यूमेन्ट्री प्रोग्राम लर्निंग मीडिया एण्ड टेक्नोलॉजी, 1985
13. स्टीफन हाइन्स, इजेक एनकमाह–येबीह, स्टीफन ओ नैल, केथरिन नीडल, क्लेरी आर्मस्ट्रॉग., द इम्पेक्ट ऑफ नेचर डॉक्यूमेन्ट्रीज एण्ड विलिंगनेस टू पे एन्ट्रॉफी बैलेन्सिंग एण्ड द एण्ड ब्लू प्लेनेट इफेक्ट जनरल ऑफ इनवायरमेन्टल प्लेनिंग एण्ड मेनेजमेन्ट, 2020